International Journal of Latest Emerging Multidisciplinary Research
Volume 1 ~ Issue 1 (Jan- June 2025) pp: 25-28
www.ijlemr.net

Research Paper

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

अक्षय कुमार
शिक्षा विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय,मणिपुर

शिक्षा मनुष्य की मानसिकता,दृष्टिकोण,सोच और दृष्टिकोण में बदलाव लाकर सामाजिक परिवर्तन शुरु करने या शामिल करने का माध्यम है। शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रुप में किया जाता है शिक्षा व सामाजिक परिवर्तन एक दुसरे से जुड़े हुए है। यदि उनमें से एक बदलता है या प्रभावित होता है तो दूसरा भी प्रभावित होगा। जैसे शिक्षा,सामाजिक सुधार या परिवर्तन का कारण बनती है और दूसरी और सामाजिक परिवर्तन शैक्षिक परिवर्तन का कारण बनता है।शिक्षा समाज के युवाओ में नये विचार या दृष्टिकोण पैदा करती है। शिक्षा लोगों को गरीबीपन और पिछड़ेपन अज्ञानता से बाहर आने में मदद कर सामाजिक परिवर्तन को सम्भव बनाती है।

कोई भी समाज शिक्षा के द्वारा ही वांछित परिवर्तन ला सकता है।शिक्षा द्वारा ही सामाजिक आर्थिक प्रगति हासिल करने, आय वितरण में सुधार, रोजगार के नये अवसर पैदा कर गरीबी दूर करने में महत्वपुर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा द्वारा ही सामाजिक वर्ग भेदभाव,लिंगपूर्वाग्रह को दूर किया जा सकता है। तथा न्याय व समानता को बढावा दिया जा सकता है। मनुष्य जीवन के प्रत्येक पहलु में शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन सम्भव है।

शिक्षा ने समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए युवा पीढ़ी के समाजीकरण के एजेंट के रुप में कार्य किया है।शिक्षा द्वारा ही समाज में होने वाला परिवर्तन सम्भव है। वेंकटरायप्पा ने शिक्षा व समाज के संबंध को स्पष्ट करते हुए लिखा है "शिक्षा समाज के बालकों का समाजीकरण करके उसकी सेवा करती है इसका उद्देश्य–युवको को सामाजिक मुल्यों विश्वासों और समाज के प्रति मानव को आत्मसात करने के लिए तैयार करना और इनको समाज की क्रियाओं में भाग लेने के योग्य बनाना है।"

सामाजिक परिवर्तनलाने में एक सशक्त माध्यम के रुप में शिक्षा की उपयोगिता सिद्व हो चुकी है।इतिहास पर यदि दृष्टिपात करे तो ज्ञात होताहै कि शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन हुए है,हो रहे हैं तथा भविष्य में भी होते रहेगें। शिक्षा के द्वारा ही अन्धविश्वासों तथा जातिय संकिर्णता की भावना जैसे परिवर्तन सम्भव है।

समाज को आधुनिकिकरण की तरफ ले जाने में भी शिक्षा का अहम योगदान है। भारत सरकार ने भी 1985 में शिक्षा की चुनौती : नीति संबंधी परिपेक्ष्य नामक दस्तावेज में यह कहा था कि मानव के

इतिहास में शिक्षा समाज के विकास के लिए एक सतत क्रिया और आधार रही है। मनोवृतियों मूल्यों तथा ज्ञान व कौशल दोनो को ही क्षमताओं के विकास के मसध्यम से शिक्षा लोगों को बदलती परिस्थितियों के अनुरुप बनाने के लिए उन्हे शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है। सामाजिक विकास के लिए प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है।निःसंदेह इतिहास से ज्ञात होता है कि राष्ट्रों के विकास में मानव संसाधनों द्वारा अदा की गई भूमिकाए महत्वपूर्ण सिद्व हुई है।

सामाजिक परिवर्तन के एजेंट के रुप में शिक्षा को मान्यता प्राप्त है। यह राष्ट्र के विकास का भी प्रमुख घटक है। इसे सामाजिक परिवर्तन के लिए एक वाहक के रुप में देखा जाता है लेकिन इसे मुख्य रुप से एक संरक्षण भूमिका आवंटित की जाती है क्योंकी इसका मुख्य कार्य युवाओं के समाजीकरण और सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखना है शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रुप में किया जा सकता है।बाल केन्द्रित शिक्षा के माध्यम से छात्र परिवर्तन में अपनी भूमिका देखने में सक्षम होते है सामाजिक परिवर्तन उस समाज के भीतर व्यक्तियों के सामूहिक परिवर्तन से आता है। फ्रांसीस जे.ब्रउन के अनुसार "शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है।" यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावी ढंग से सक्षम बनाती है समाज की गतिविधियों में भाग लेना और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देना है।

युवाओं का समाजीकरण करना शिक्षा का एक मुख्य कार्य है, यह न केवल सामाजिक परिवर्तन के साधन के रुप में कार्य करता है बल्कि बदलाव की दर को बढाने का कार्य भी करता है।शिक्षा विज्ञान और प्रोद्यौगिकी विकास का रास्ता तैयार करता है। शिक्षा द्वारा ही नवीन दृष्टिकोण विकसीत होता है।जो पूर्वाग्रहों अंधविश्वासों और परम्परागत मान्यताओ से लड़ना सिखाती है।शिक्षा ही समाज में बदलाव की इच्छा पैदा करती है।

शिक्षा सोच विचार धारा में परिवर्तन को प्रभावित करती है और यही समाज को जीवित तथा समृद्व बनाती है। शिक्षा भारत में सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली साधन बन गयी है।इस प्रकार आधुनिक जटिल समाजों में,शिक्षा को न केवल सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने वाली वस्तु नियंत्रक शक्ति के रुप में देखा जा सकता है।समाज को यदि हमें सही दिशा में परिवर्तित करना है तो शिक्षा प्रणाली पर ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षा को इस प्रकार नियोजित करना होगा जो समग्र रुप से लोगों की जरुरतों को पूरा कर सके। शिक्षा का उद्देश्य नागरिक जीवन स्तर को उन्नत करना है जिससे राष्ट्र निर्माण सम्भव हो ।शिक्षा ही राष्ट्रीय एकता लाने में उपयोगी सिद्व होती है।

भारतीय सन्दर्भ में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक माना गया है।यही कारण है नई शिक्षा नीति के तहत प्रारंभिक शिक्षा के अविलम्ब सार्वभौमिकरण पर बल दिया गया था।इसका उद्देश्य सामान्य व्यक्ति को एक ऐसे जीवन के लिए तैयारी करनाहै जिसमें आधुनिक संसार को समझने की क्षमता विकसित हो सके इसी प्रकार माध्यमिक और उच्च शिक्षा की संरचना में भी औपचारिक दोहरेपन और अर्थव्यवस्था में सामान्य कौशलों स्तर को उॅचा उठााने की संस्कृति है।

इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन शिक्षा एक दूसरे से संबंधित है। शिक्षा का मनुष्यको सामाजिक,अनुशासित बनाकर सद्गुण प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।समाज अपनी आवश्यकताओं तथा

*Corresponding Author: अक्षय कुमार

आर्दशों के अनुसार शिक्षा का स्वरुप निर्धारित करता है। शिक्षा के साथ समाज का प्रगाढ संबंध है। इसलिए शिक्षा की प्रक्रिया भिन्न भिन्न समाज द्वारा अपने आर्दशों व आवश्यकता के अनुरुप परिवर्तित है।अर्थात कोई भी समाज शिक्षा के माध्यम से वंदित परिवर्तन ला सकता है। जहां शिक्षा होती है वहीं समाज सभ्यता की ओर अग्रसर होता है।शिक्षा के अभाव में समाज का अहित होता है। सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा आधारभूत भूमिका अदा करती है।

न्याय व समानता को बढावा दिया जा सकता है। मनुष्य जीवन के प्रत्येक पहलु में शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन सम्भव है। शिक्षा ने समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए युवा पीढ़ी के समाजीकरण के एजेंट के रुप में कार्य किया है।शिक्षा द्वारा ही समाज में होने वाला परिवर्तन सम्भव है। वेंकटरायप्पा ने शिक्षा व समाज के संबंध को स्पष्ट करते हुए लिखा है "शिक्षा समाज के बालकों का समाजीकरण करके उसकी सेवा करती है इसका उद्देश्य–युवको को सामाजिक मुल्यों विश्वासों और समाज के प्रति मानव को आत्मसात करने के लिए तैयार करना और इनको समाज की क्रियाओं में भाग लेने के योग्य बनाना है।"

भारत सरकार ने भी 1985 में शिक्षा की चुनौती : नीति संबंधी परिपेक्ष्य नामक दस्तावेज में यह कहा था कि मानव के इतिहास में शिक्षा समाज के विकास के लिए एक सतत क्रिया और आधार रही है। मनोवृतियों मूल्यों तथा ज्ञान व कौशल दोनो को ही क्षमताओं के विकास के मसध्यम से शिक्षा लोगों को बदलती परिस्थितियों के अनुरुप बनाने के लिए उन्हे शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है। सामाजिक विकास के लिए प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है।निःसंदेह इतिहास से ज्ञात होता है कि राष्ट्रों के विकास में मानव संसाधनों द्वारा अदा की गई भूमिकाए महत्वपूर्ण सिद्व हुई है।

सामाजिक परिवर्तनलाने में एक सशक्त माध्यम के रुप में शिक्षा की उपयोगिता सिद्व हो चुकी है।इतिहास पर यदि दृष्टिपात करे तो ज्ञात होताहै कि शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन हुए है,हो रहे हैं तथा भविष्य में भी होते रहेगें। शिक्षा के द्वारा ही अन्धविश्वासों तथा जातिय संकिर्णता की भावना जैसे परिवर्तन सम्भव है। समाज को आधुनिकिकरण की तरफ ले जाने में भी शिक्षा का अहम योगदान है।

शिक्षा का उपयोग व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए एक उपकरण के रुप में किया जाता है शिक्षा व सामाजिक परिवर्तन एक दुसरे से जुड़े हुए है। यदि उनमें से एक बदलता है या प्रभावित होता है तो दूसरा भी प्रभावित होगा। जैसे शिक्षा,सामाजिक सुधार या परिवर्तन का कारण बनती है और दूसरी और सामाजिक परिवर्तन शैक्षिक परिवर्तन का कारण बनता है।शिक्षा समाज के युवाओ में नये विचार या दृष्टिकोण पैदा करती है। शिक्षा लोगों को गरीबीपन और पिछड़ेपन अज्ञानता से बाहर आने में मदद कर सामाजिक परिवर्तन को सम्भव बनाती है।

भारत सरकार ने भी 1985 में शिक्षा की चुनौती : नीति संबंधी परिपेक्ष्य नामक दस्तावेज में यह कहा था कि मानव के इतिहास में शिक्षा समाज के विकास के लिए एक सतत क्रिया और आधार रही है। मनोवृतियों मूल्यों तथा ज्ञान व कौशल दोनो को ही क्षमताओं के विकास के मसध्यम से शिक्षा लोगों को बदलती परिस्थितियों के अनुरुप बनाने के लिए उन्हे शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है। सामाजिक विकास के लिए प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है।निःसंदेह इतिहास से ज्ञात होता है कि राष्ट्रों के विकास में मानव संसाधनों द्वारा अदा की गई भूमिकाए महत्वपूर्ण सिद्व हुई है।

है।बाल केन्द्रित शिक्षा के माध्यम से छात्र परिवर्तन में अपनी भूमिका देखने में सक्षम होते है सामाजिक परिवर्तन उस समाज के भीतर व्यक्तियों के सामूहिक परिवर्तन से आता है। फ्रांसीस जे.ब्राउन के अनुसार "शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाती है।" यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावी ढंग से सक्षम बनाती है समाज की गतिविधियों में भाग लेना और समाज की प्रगति में सकारात्मक योगदान देना है।

मनोवृतियों मूल्यों तथा ज्ञान व कौशल दोनो को ही क्षमताओं के विकास के मसध्यम से शिक्षा लोगों को बदलती परिस्थितियों के अनुरुप बनाने के लिए उन्हे शक्ति और लचीलापन प्रदान करती है। सामाजिक विकास के लिए प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान देने के योग्य बनाती है।निःसंदेह इतिहास से ज्ञात होता है कि राष्ट्रों के विकास में मानव संसाधनों द्वारा अदा की गई भूमिकाए महत्वपूर्ण सिद्व हुई है।

समाज को आधुनिकिकरण की तरफ ले जाने में भी शिक्षा का अहम योगदान है। भारत सरकार ने भी 1985 में शिक्षा की चुनौती : नीति संबंधी परिपेक्ष्य नामक दस्तावेज में यह कहा था कि मानव के इतिहास में शिक्षा समाज के विकास के लिए एक सतत क्रिया और आधार रही है।

सन्दर्भ :–

1 एस.के मिश्राः सामाजिक परिवर्तन के कारक के रुप में शिक्षा

2 पी.के.मिश्राः शिक्षा की सामाजिक नीव में परिपेक्ष्य, शिप्रा प्रकाशन 2010

3 नमिता पाटीलः सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

4 राम आहुजाः भारत में सामाजिक समस्याए नई दिल्ली,पृ.1–2

5 आर.जी.पाठकःआधुनिक भारतीय शिक्षा संस्थान एवं समाधान,नई दिल्ली,2010

6 भास्कर मिश्र : शिक्षक और समाज,नई दिल्ली 2002

7 प्रो. रमन बिहारी लाल : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,मेरठ

8 आर.जी.सैयदेनः एजुकेशन कल्चर एंड ए सोशल आर्डर पृष्ठ 26

*Corresponding Author: अक्षय कुमार